अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2024) दिनांक : 24.08.2024

समय सीमा : 3 घंटा पंचम वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

संजया–25

प्र. 1 कोई पांच द्वार लिखें– 10

(क) छेदोपस्थापनीय–गति स्थिति पदवी द्वार।

(ख) यथाख्यात चारित्र–प्रव्रज्या द्वार।

(ग) परिहार विशुद्धि–अंतर द्वार।

(घ) छेदोपस्थापनीय–आकर्ष द्वार।

(ड़) सामायिक–परिणाम द्वार।

(च) परिहार विशुद्धि–काल द्वार।

(छ) सूक्ष्मसंपराय–ज्ञान, प्रज्ञापना द्वार।

प्र. 2 किन्हीं छह प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखें– 6

(क) यथाख्यात चारित्र में कितने भाव पाते हैं? नाम लिखें।

(ख) आनुपारिहारिक साधु नित्यभोजी किस अपेक्षा से होते हैं?

(ग) परिहार विशुद्धि में लेश्या कितनी व किस अपेक्षा से है?

(घ) सूक्ष्म संपराय चारित्र में भाव व समुद्घात कितने व कौन से?

(ड़) यथाख्यात चारित्र शाश्वत किस अपेक्षा से है?

(च) चारित्र विशुद्धि की तरतमता का क्या कारण है?

(छ) अंतर द्वार-सामायिक चारित्र अनेक जीवों की अपेक्षा अंतर रहित क्यों है?

(ज) परिहार विशुद्धि वालों का संहरण क्यों नहीं होता है?

प्र. 3 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 9

(क) छेदोपस्थापनीय का उपसंपद्हान द्वार लिखते हुए बतायें कि इस चारित्र को छोड़कर अन्य स्थानों को प्राप्त करने की क्या अपेक्षा है?

(ख) अल्प बहुत्व द्वार-सामायिक, छेदोपस्थापनीय व परिहार विशुद्धि चारित्र का अल्पबहुत्व लिखें।

(ग) परिहार विशुद्धि चारित्र-अंतर द्वार–अनेक जीवों की अपेक्षा जघन्य व उत्कृष्ट स्थिति किस प्रकार है?

(घ) सूक्ष्म संपराय चारित्र-स्थिति द्वार लिखते हुए बतायें कि अनेक जीवों की अपेक्षा जघन्य उत्कृष्ट स्थिति किस प्रकार से घटित होती है?

नियंठा–25

प्र. 4 कोई छह द्वार लिखें– 18

(क) स्नातक-काल द्वार।

(ख) कषाय कुशील-प्रव्रज्या द्वार।

(ग) बकुश-आकर्ष द्वार।

(घ) निर्ग्रंथ-परिणाम-स्थिति द्वार।

(ड़) पुलाक-अंतर द्वार।

(च) प्रतिसेवना-कर्म उदीरणा द्वार।

(छ) पुलाक-स्थिति द्वार।

प्र. 5 किन्हीं सात प्रश्नों के उत्तर लिखें– 7

(क) यथासूक्ष्म पुलाक किसे कहते हैं?

(ख) बकुश-स्थिति द्वार-जघन्य स्थिति किस अपेक्षा से है?

(ग) 'अछवी' शब्द का क्या तात्पर्य है?

(घ) स्नातक के परिणाम किस गुणस्थान में कैसे होते हैं?

(ड़) बकुश-ज्ञान-अध्ययन द्वार लिखें।

(च) पुलाक में लेश्या कितनी व किस अपेक्षा से?

(छ) निर्ग्रंथ-क्षेत्र द्वार लिखें।

(ज) प्रतिसेवना का भवद्वार लिखें।

गीतिका-नियंठा दिग्दर्शन–10

प्र. 6 किन्हीं दो प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 2

(क) कौन से निर्ग्रंथ के चारित्र के पर्यव समान होते हैं?

(ख) छद्मस्थ की खामी को देखकर कौन रो पड़ता है?

(ग) मनुष्य का जन्म.....है इस जीव ने अनेक बार.....और.....में भ्रमण किया है।

प्र. 7 कोई दो पद्य अर्थ सहित लिखें– 8

(क) सम्यक्त.....सोय।

(ख) निर्ग्रंथ.....होय।

(ग) मासी.....जोय।

(घ) पडिसेवी मूल.....नहि होय।

पूर्व कंठस्थ-ज्ञान–40

प्र. 8 सभी प्रश्नों के उत्तर लिखें– 2

(क) **पच्चीस बोल–**सात कोटि त्याग

अथवा

स्पर्शनेन्द्रिय के विषय।

(ख) **चतुर्भंगी–**पन्द्रहवां या उन्नीसवां बोल। 3

(ग) **पच्चीस बोल की चर्चा–**छह योग से लेकर ग्यारह योग तक 4

अथवा

जीव के पांच भेद से लेकर दस भेद तक।

(घ) **तत्त्वचर्चा–**पुण्य धर्म आदि एक या दो। 3

अथवा

छह-द्रव्यों पर छह में नौ में की चर्चा।

(ड़) **कर्मप्रकृति**–ईर्यापथिक बंध का वर्णन करें 4

अथवा

चारित्र मोह की प्रकृतियों की स्थिति का वर्णन .....करोड़ा करोड़ सागर की है। यहां तक वर्णन करें।

(च) **जैन तत्त्व प्रवेश**–(प्रथम खंड) सामान्य गुण के भेदों का वर्णन करें। 4

अथवा

दृष्टांत द्वार-आश्रव का वर्णन करें।

(छ) **जैन तत्त्व प्रवेश** (द्वितीय खंड) व्रताव्रत द्वार–पुलाक से प्रारंभ करते हुए दोषों के पूर्व तक लिखें। 4

अथवा

श्रावक गुण द्वार लिखें।

(ज) **इक्कीस द्वार**–असंज्ञी 4

अथवा

सम्यक् मिथ्यादृष्टि का पूरा बोल लिखें।

(झ) **बावन बोल**–उदय के तैंतीस बोलों में सावद्य कितने? निरवद्य कितने? 4

अथवा

बावनवां बोल–नौ तत्त्व के एक सौ पन्द्रह बोलों की पृच्छा, इनमें सावद्य कितने? निरवद्य कितने?

(ञ) **लघु दण्डक**–गति आगति द्वार–प्रारंभ से लिखते हुए तेजसकाय, वायुकाय से पहले तक लिखें। 4

अथवा

स्थिति द्वार से तिर्यंच पंचेन्द्रिय की स्थिति लिखें।

(ट) **पांच ज्ञान**–मनःपर्यव ज्ञान का विषय-क्षेत्रता का वर्णन करें। 4

अथवा

सम्पूर्ण आकाश के..... उद्घाटित रहता है, तक वर्णन करें।